सिंहेश्वर मंदिर न्यास समिति, सिंहेश्वर
ऊँ नमः शिवाय

बाबा सिंहेश्वर नाथ मंदिर बिहार राज्य के मधेपुरा जिला अन्तर्गत दौरम मधेपुरा, रेलवे स्टेशन से 8 (आठ) किलो मीटर उत्तर पक्की रोड से संबद्ध सिंहेश्वर अंचल मुख्यालय में अवस्थित है। सिंहेश्वर स्थान भगवान शंकर की पावन तप स्थली है। षोडशा महाजनपद में शीर्षत्थ जनपद अंग देश का यह महत्पूर्ण तीर्थ स्थल है। अंग देश के निर्माण में श्री भगवान शिव का उल्लेखनीय योगदान है। बालमीकीय रामायण के अनुसार देवेश्वर रुद्र ने अपने क्रोध से कामदेव को अंग हीन कर दिया तभी से वह अपंग नाम से विख्यात हुआ। शोभाग्यशाली कन्दर्प जहाँ अपना अंग छोड़ा था वह प्रदेश अंग देश के नाम से चर्चित हुआ। दक्षिण में मन्दर पर्वत और उत्तर में मूजवान पर्वत तक फैले विशाल वन प्रदेश श्लेषात्मक वन था जहाँ कन्दर्प दहन के पश्चात भगवान शिव समाधित्थ हुए। कोसी की कई धारायें इस वन में बहती थी। वराह पुराण के उत्तरार्द्ध की एक पूरा कथ के अनुसार उसी वन में भगवान शिव को ढूढ़ते हुए देव हुए देवराज इन्द्र के साथ के साथ विष्णु और ब्रह्ममा पहुँचे। भगवान शिव एक सुन्दर हरिण के रुप में विचरण करते थे। तीनों अर्न्तरयामी देवताओ ने इस हरिण को देखकर ही समझ लिया। ये ही भगवान शंकर है और उस हरिण को पकड़ने में वे सफल भी हुए। इन्द्र ने हरिण की सींग का अग्रभाग, ब्रह्मा ने मध्य भाग और विष्णु ने निम्न भाग पक्ड़ा। एकाएक सींग तीन भाग में टूट कर विभाजित हो गयी। तीनों देवताओं के हाथ में सींग के एक–एक भाग रहे और हरिण लुप्त हो गया। तभी आकाशवाणी हुई कि अब शिव नहीं मिलेंगें। कहा जाता है कि विष्णु ने लोक कल्याणार्थ अपने भाग की सींग को जिस स्थान पर स्थापित किया– वही वर्त्तमान सिंहेश्वर '(ऋृगेश्वर) है। इस प्रकार इसका सिंहेश्वर नाथ नाम सार्थक हुआ। वराह पुराण की इस पुरा कथा के अनुसार तीनों देवता कोसी के तीर पर भगवान शिव से मिलने पहुँचे थे। इस तथ्य को कालिदास कृत कुमारसंभव में स्पष्ट किया गया है। इसके अनुसार कोसी के प्रपात के पास ही भगवान शिव का निवास है और देवताओं से वहीं मिलने का स्थान निर्दिष्ट किया गया था। त्रेता युग में महाराज दशरथ के जामाता महर्षि श्रृंगी ने पुत्रेष्ठि यज्ञ सम्पन्न कराया था, कहा जाता है कि श्रृंगी श्रृषि ने सिंहेश्वर स्थान में ही यह यज्ञ प्रारंभ किया था। महर्षि श्रृंगी के आराध्य श्रृंगेश्वर थे, प्रयत्न लाघव से श्रृंगेश्वर सिंहेश्वर हो गये और उनका स्थान आज सिंहेश्वर स्थान हो गया है। बाबा सिंहेश्वर नाथ की कहानी बहुत लम्बी और प्राचीन है। शिव महापुराण के रुद्र संहिता खंण्ड में महिर्षि दधीचि और राजा दार्व में शास्त्रार्थ इसी सिंहेश्वर स्थान में हुआ था।

सिंहेश्वर नाथ महादेवजी के शिव लिंग के तीन स्वरुप हैं– भाव लिंग प्राण लिंग और इष्ट लिंग भव कलाविहिन, सद्धप् काल और दिक् से अपरिच्छिन्न एवं परात्पर है। इसका साक्षात श्रद्धा से होता है। प्राण लिंग कलाहीन और कलायुक्त दोनों है। बुद्धि से इसका साक्षात संभव है। इष्ट लिंग कला युक्त है अतः नेत्र से इसका दर्शन संभव है। इन तीनों को क्रमशः सतचित और आनन्द कहा गया है। परम तत्व भाव लिंग है, सूक्ष्म प्राण लिंग है और स्थूल इष्ट लिंग है। सिंहेश्वर स्थान में स्थापित शिवलिंग इष्ट लिंग है जो मंत्रयुक्त, मंत्रहीन, क्रियायुक्त, ज्ञानी, अज्ञान, सभी के लिए दर्शनीय एवं पूजनीय है।

न्यास समिति को चल सम्पति के अतिरिक्त अचल सम्पति भी है। सिंहेश्वर मंदिर न्यास समिति के स्थायी आय के निम्नलिखित श्रोत हैं :–

मंदिर में चढ़ावा, मुण्डन न्यौछावर, विवाह न्यौछावर, गाड़ी न्यौछावर, वाहन पड़ाव शुल्क, मवेशी हाट, गुदरी हाट, जोत जमीन के ठीका, फलकर जलकर, धर्मशाला भाड़ा वसूली, आस्था भवन धर्मशाला, प्रतिमा सिंह धर्मशाला भाड़ा, स्थायी दुकान भाड़ा अस्थायी दुकान भाड़ा, श्रृंगार शुल्क, शिवरात्रि मेला एवं विविध (दान आदि) आर्थिक वर्ष 2008–2009 में उपरोक्त कुल श्रोतों से कुल 5316437.00 (तीरपन लाख सोलह हजार चार सौ सैतिस) रुपये हुए। न्यास समिति को निम्नलिखित मद–रागभोग, आस्थापना, मंदिर का पोशन, कार्यालय पोशन, मवेशी हाट पोशन, अतिथि अभ्यागत, मुकदमा, मेला विकास, एवं निर्माण, धर्मशाला पोषण, न्यास पर्षद शुल्क, माल गुजारी में कुल मो0–1527127.00 (पन्द्रह लाख सत्ताई हजार एक सौ सत्ताईस) रुपये खर्च हुए। सिंहेश्वर मंदिर न्यास समिति के बचत खाता गौरीपुर सेन्द्रल बैंक में मो0–4066401.00 (चालीस लाख छियासठ हजार चार सौ एक) रुपये, भारतीय स्टेट बैंक, सिंहेश्वर में मो0–3095759.85 (तीस लाख पनचानवे हजार सात सौ उनसठ रुपये पचासी पैसे) जमा है तथा सावधि जाम (फिक्सड डिपोजिट) में सम्प्रति सेन्ट्रल बैंक, मधेपुरा में मो0–3785416.00 (सैतीस लाख पचासी हजार चार सौ सोलह) रुपये एवं भारतीय स्टेट बैंक, सिंहेश्वर में मो0–4468208.00 (चौवालिस लाख अरसठ हजार दो सौ आठ) रुपये, सेन्ट्रल बैंक, गौरीपुर में 3656121.00 (छत्तीस लाख छप्पन हजार एक सौ एक्कीस) रुपये, कुल मो0–11909745.00 (एक करोड़ उन्नीस लाख नौ हजार सात सौ पैतालीस) रुपये जमा है, जो परिपक्व होने पर मो0–15354056.00 (एक करोड़ तिरपन लाख चौव्वन हजार छप्पन) रुपये हो जायेंगें।